INTERNATIONAL JOURNAL OF HISTORY

E-ISSN: 2706-9117
P-ISSN: 2706-9109
www.historyjournal.net
IJH 2021; 2(2): 05-09
Received: 09-11-2020
Accepted: 15-12-2020

डां० संजय कुमार कुशवाहा
एसि0 प्रोफेसर, प्राचीन इतिहास विभाग, एस. पी. एम. कालेज, इलाहाबाद, विश्वविद्यालय, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
डां० संजय कुमार कुशवाहा
एसि0 प्रोफेसर, प्राचीन इतिहास विभाग, एस. पी. एम. कालेज, इलाहाबाद, विश्वविद्यालय, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश, भारत

प्रहलादपुर शिवाला (चन्दौली, यू. पी.) से प्राप्त अवशेषों का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

डां० संजय कुमार कुशवाहा

सारांश
पृथ्वी के ऊपर बहुत से ऐसे पुरास्थल विद्यमान हैं जो इतिहास के लंबे कालखंड की गाथा को अपने गर्भ में सजोये हुए हैं। जो समय के साथ गुलजार हुए और फिर काल के गाल में विलीन हो गए लेकिन वहां निवास करने वाली मानवीय जातियों के द्वारा समकालीन समय में प्रयोग की गई वस्तुएं समय के साथ छूटती गई। वर्तमान समय में इनके अवशेष टीले एवं खंडहर के रूप में प्राप्त होते हैं। प्रस्तुत लेख में ऐसे ही एक पुरास्थल प्रहलादपुर शिवाला से प्राप्त पुरावशेषों को आधार बनाकर क्षेत्र विशेष की ऐतिहासिक विरासत को उद्घाटित करने का प्रयास किया गया है। इस पुरास्थल से लगभग 800 मीटर दक्षिण की ओर प्रहलादपुर कोट नामक पूरास्थल स्थित है। जिसका उत्खनन काशी हिंदू विश्वविद्यालय के प्राचीन इतिहास विभाग के प्रोफेसर ए. के. नारायण के निर्देशन में टी. एन. राय एवं बी. पी. सिंह के द्वारा 1963 ईस्वी में करवाया गया था। इस पुरास्थल का इतिहास लगभग प्रथम शताब्दी ईसा पूर्व में समाप्त हो जाता है इसके आगे की इतिहास की जानकारी भी प्रहलादपुर शिवाला पुरास्थल से प्राप्त अवशेषों के आधार पर होती हैं। इस पुरास्थल से एक मंदिर स्थापत्य की भी प्राप्ति हुई है जिसके द्वार के ऊपर 10 पंक्तियों के लेख की भी प्राप्ति हुई है। जिसमें मूल स्थान का नाम, सन् एवं बनारस के नाम का उल्लेख है जो इस पुरास्थल की महत्ता को ऐतिहासिक विरासत की पटल पर स्थापित करता है।

मुख्य शब्दः पुरातत्व, प्राचीनता, इतिहास, परिप्रेक्ष्य, प्रहलादपुर शिवाला

प्रस्तावना
किसी भी स्थान या क्षेत्र विशेष की प्राचीनता, इतिहास एवं विरासत को जानने के लिए सर्वेक्षण एक महत्वपूर्ण विधा है और पुरातत्व के लिए सर्वेक्षण उस रोशनी की तरह है जो अन्धेरे में प्रकाश करता है अर्थात सर्वेक्षण के द्वारा भी अप्रकाशित एवं दबे पड़े पुरावशेषों को उद्घाटित करने का कार्य किया जाता है। मेरे द्वारा मध्यगंगा मैदान में स्थित चन्दौली जिले की सकलडीहा और चन्दौली तहसील में सर्वेक्षण का कार्य किया गया है। यह सर्वेक्षण मुख्यतः चन्दौली जिले का गंगा नदी से लगे भू–भाग का है। इस क्षेत्र में सर्वेक्षण के पीछे मेरा उद्देश्य प्रहलादपुर पुरास्थल के आस–पास और पुरास्थलों को खोजना एवं प्रहलादपुर पुरास्थल का इतिहास प्रथम शताब्दी ईसा पूर्व के लगभग समाप्त हो जाता है क्यो? और यहाँ पर निवास करने वाला मानव स्थानान्तरित होकर कहाँ चला जाता है? इस जिले में गंगा नदी से लगभग 3 कि0मी0 की दूरी पर स्थित एक और पुरास्थल बैराठ है जहाँ पर अलेकजेंडर कनिंघम द्वारा सीमित पैमाने पर उत्खनन करवाया गया और इसे दुगीकृत पुरास्थल घोषित किया। यह पुरास्थल सकलडीहा तहसील में स्थित है। इन दोनों पुरास्थलों को आधार बनाकर सर्वेक्षण का कार्य किया गया है।
इस जिले में इससे पूर्व भी सर्वेक्षण किया गया है जिसमें प्रथम नाम अलेक्जेंडर कनिंघम का आता है इनके द्वारा सर्वप्रथम 1875–76 में सर्वेक्षण का कार्य किया गया था (कनिंघम 1880)। 1877–80 में अलेक्जेण्डर कनिंघम के निर्देशन में ए0सी0एल कर्लाइल द्वारा सर्वेक्षण कार्य किया गया और बैराठ पुरास्थल को उत्खनित कर दुर्गीकृत शहर के रूप में चिन्हित किया गया (कार्लाइल, 1885) इसी क्रम में 1891 ई0 में फूहरर द्वारा सर्वेक्षण का कार्य किया गया और एक नवीन पुरास्थल प्रहलादपुर को सर्वप्रथम सर्वेक्षित किया गया (फुहरर; 1891:234)। इस कार्य के लगभग 60 साल के लम्बे अन्तराल के बाद काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग एवं उत्तर प्रदेश राज्य पुरातत्व विभाग द्वारा 1957 से लेकर आज तक इस जिले में सर्वेक्षण एवं उत्खनन किया जा रहा है। इस जिलों में प्रथम व्यवस्थित उत्खनन का कार्य सन 1963–64 ईस्वी में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग के ए0के0 नारायण और टी0एन0 राय द्वारा प्रह्लादपुर पुरास्थल का करवाया गया और जिले का इतिहास प्राक् उत्तरी काली चमकीली मृदभाण्ड परमपरा तक हो गया (नारायण एवं राय, 1968:5–7)। सन् 1962 ईस्वी में इलाहाबाद विश्वविद्यालय के जी0आर0 शर्माद्वारा ककोरिया नामक महापाषाणिक पुरास्थल का

उत्खनन करवाया गया हॉलाकि यह पुरास्थल चन्दौली जिले के पहाड़ी क्षेत्र में स्थित है (पाल, 1986: 1–50)। इस क्षेत्र में और भी पुरास्थल है जिनका उत्खनन कार्य किया गया जिसमें मल्हार, हेतिमपुर और तकियापार है तथा वर्तमान समय में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग के प्रभाकर उपाध्याय द्वारा 'मूसाखाड़' नामक पुरास्थल का उत्खनन कार्य करवाया जा रहा है। मल्हर पुरास्थल का उत्खान कार्य सन् 1997–98 ई0 में उत्तर प्रदेश राज्य पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग के द्वारा करवाया गया जहां से ताँवे एवं लोहे के भण्डार का प्रमाण मिला है (तिवारी, 1997–98: 57–67)। इन कार्यो के बाद सन् 1999–2000 ईस्वी में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग के पुरूषोत्तम सिंसह राकेश तिवारी और आर.एन. सिंह द्वारा सर्वेक्षण का कार्य किया गया और कुल 24 पुरास्थलों को चिन्हित किया गया। (सिंह एवं अन्य 1999–2000: 137–148) अभी हाल ही में डा0 ओम प्रकाश भारती द्वारा भी चन्दौली जिले के पुरातत्व पर शोध कार्य किया गया जिसमें उनके द्वारा 120 पुरास्थलों को सर्वेक्षित किया गया है।

यदि इन सभी कार्यो को देखा जाय तो ये सभी कार्य चन्दौली जिले के पहाड़ी एवं उनके समीपवर्ती क्षेत्रों में किये गये है जो कर्मनाशा और चन्द्रप्रभा नदी द्वारा सिंचित क्षेत्र है। गंगा नदी के समीपवर्ती क्षेत्रों में ए.के नारायण एवं टी0एन0 राय के कार्यो के बाद बहुत कम या नगण्य के बराबर कार्य हुआ है जिससे जिले का पुरातात्विक मानचित्र इस क्षेत्र में खाली प्रतीत होता है। इसी खालीपन को भरने का प्रयास मेरे छोटे से सर्वेक्षण कार्य के द्वारा किया गया है और 14 पुरास्थलों को इस गांगेय क्षेत्र में चिन्हित किया गया है। इन पुरास्थलों (सारणी सख्या–1) का विवरण निम्नवत् है–

सारणी 1: स्व सर्वेक्षण में प्राप्त पुरास्थल एवं अवशेषों का विवरण

पुरास्थल	स्थिति	अक्षांश एवं देशान्तर	मृदभाण्ड परम्परा	अन्य अवशेष	जल श्रोत
केशवपुर	उत्तर प्रदेश के चन्दौली जिले की सकलडीहा तहसील में	25⁰ 24'39'' उत्तरी अक्षांश 82⁰ 15'47'' पूर्वी देशान्तर	लाल पात्र, लाल–लेपित पात्र, अलंकृत लाल पात्र एवं काले पात्र	कुआ और पक्की ईट से बनी संरचना	गंगा की सहायक बाणगंगा नदी
खण्डवारी कोट (जगरनाथ पुर)	उत्तर प्रदेश के चन्दौली जिले की सकलडीहा तहसील में	25⁰ 24'40'' उत्तरी अक्षांश 83⁰ 12'39'' पूर्वी देशान्तर	लाल, लाल–लेपित एवं कृष्ण–लोहित पात्र	कुआ और पक्की ईट से बनी संरचना	गंगी नदी
देवरापुर	उत्तर प्रदेश के चन्दौली जिले की सकलडीहा तहसील में	25⁰ 21'30'' उत्तरी अक्षांश 83⁰ 15'29'' पूर्वी देशान्तर	लाल और लाल–लेपित पात्र खण्ड	पक्की ईट एवं मूर्तियाँ	सुरज कुण्ड ताल
देवरापुर कोट	उत्तर प्रदेश के चन्दौली जिले की सकलडीहा तहसील में	25⁰ 23'57'' उत्तरी अक्षांश 83⁰ 15'29'' पूर्वी देशान्तर	लाल और लाल–लेपित पात्र खण्ड	पक्की ईट एवं मूर्ति की प्राप्ति	सुरज कुण्ड ताल
महेशी (नौल)	उत्तर प्रदेश के चन्दौली जिले की सकलडीहा तहसील में	25⁰ 23'57'' उत्तरी अक्षांश, 83⁰ 17' 52'' पूर्वी देशान्तर		पषाण की मूर्ति	
प्रहलादपुर कोट	उत्तर प्रदेश के चन्दौली जिले की चन्दौली तहसील में	25⁰ 26'24'' उत्तरी अक्षांश 83⁰ 27'17'' पूर्वी देशान्तर	ए.बी.पी0 डब्लू कृष्ण–लोहित, कृष्ण लेपित, लाल एवं घूसर मृदभाण्ड	कुआ और पक्की ईट से बनी संरचना तथा टेराकोटा का बना खिलौना	गंगा नदी के दांयें तट पर
प्रहलादपुर शिवाला	उत्तर प्रदेश के चन्दौली जिले की चन्दौली तहसील में	25⁰ 26'41'' उत्तरी अक्षांश 83⁰ 27'3'' पूर्वी देशन्तर	लाल, कृष्ण–लोहित एवं घूसर मृदभाण्ड	पक्की ईट और प्राचिन मन्दिर के अवशेष	गंगा नदी के दांयें तट पर
मन्त्री पट्टी चट्टी	उत्तर प्रदेश के चन्दौली जिले की चन्दौली तहसील में	25⁰ 25'23'' उत्तरी अक्षांश 83⁰ 26'52'' पूर्वी देशान्तर	लाल, कृष्ण–लोहित एवं लाल–लेपित मृदभाण्ड		गंगा नदी के दांयें तट पर
करजारा कोट	उत्तर प्रदेश के चन्दौली जिले की चन्दौली तहसील में	25⁰ 24'39'' उत्तरी अक्षांश 83⁰ 26'39'' पूर्वी देशान्तर	लाल, कृष्ण–लोहित एवं लाल–लेपित मृदभाण्ड	पक्की ईट एवं टेराकोटा का बना मूसल/लोढ़ा	गंगा नदी के दांयी ओर
भगवती माई कोट (सयैदराज ा)	उत्तर प्रदेश के चन्दौली जिले की चन्दौली तहसील में	25⁰ 15'29'' उत्तरी अक्षांश 83⁰ 21'19'' पूर्वी देशान्तर	लाल एवं लाल–लोपित मृदभाण्ड	पक्की मिट्टी की ईट	कर्मनाशा नदी के बॉयीं ओर पॉच कि0मी0 की दूरी पर
भगवती माई कोट (धरहरा)	उत्तर प्रदेश के चन्दौली जिले की सकलडीहा तहसील में	25⁰ 21'6'' उत्तरी अक्षांश 83⁰ 15'22'' पूर्वी देशान्तर	लाल एवं लाल–लेपित मृदभाण्ड	पक्की मिट्टी की दुर्गीकृत संरचना एवं परीखा के अवशेष	बाण गंगा नदी से सम्बद्ध प्राचीन ताल के तट पर
भुन्डाडीह (ओनावल)	उत्तर प्रदेश के चन्दौली जिले की सकलडीहा तहसील में	25⁰ 21'49'' उत्तरी अक्षांश 83⁰ 19'15'' पूर्वी देशान्तर	लाल, लाल–लेपित एवं कृष्ण–लोहित मृदभाण्ड तथा पात्र की टोटी	प्राचीन कुआ, पक्की ईट एवं पत्थर की बनी शील	लेहरा–मनेहरा नाला
अनजनियॉ बाबा (डेढ़गावा)	उत्तर प्रदेश के चन्दौली जिले की सकलडीहा तहसील में	25⁰ 22'51'' उत्तरी अक्षांश 83⁰ 19'34'' पूर्वी देशान्तर		पाषाण की प्राचीन मूर्तियाँ	
मिश्रापुरम	उत्तर प्रदेश के चन्दौली जिले की सकलडीहा तहसील में	25⁰ 21'6'' उत्तरी अक्षांश 83⁰ 15'17'' पूर्वी देशान्तर	लाल एवं लाल–लेपित मृदभाण्ड	पाषाण की बनी चक्की	

इन पूरास्थलों में प्रहलादपुर शिवाला पुरास्थल का महत्वपूर्ण स्थान है। यहां से प्राप्त भौतिक एवं स्थापत्य अवशेषों का विवरण निम्नवत् है।

'प्रहलादपुर शिवाला' (25⁰ 26' 41'' उत्तरी अक्षांस, 83' 27' 03'' पूर्वी देशान्तर)

प्रह्लादपुर शिवाला पुरास्थल, प्रहलादपुर (आई. ए. आर. 1961: 34–52) पुरास्थल से लगभग 800 मीटर दक्षिण पूर्व की ओर उत्तरप्रदेश के चन्दौली जिले में स्थित है। यह पुरास्थल वाराणसी से 55 कि0मी0 चन्दौली जिला मुख्यालय से 30 कि0मी0 और धानापुर पुलिस थाने से 12 कि0मी0 की दूरी पर है। गंगा नदी पुरास्थल के बॉयी ओर 500 मीटर की दूरी पर प्रवाहित होती है। पुरास्थल का विस्तार अपने मूल स्वरूप में लगभग 200 ग 200 मीटर के वृहद परिक्षेत्र में था लेकिन मार्ग बनाने कृषि कार्य करने आवास बनाने तथा पशुओं को बाधने के कारण वर्तमान समय में केवल 100 ग 50 मीटर का ही टीले का भाग बचा हुआ है। टीले की ऊँचाई भूमि सतह से लगभग 20 फीट है (चित्र संख्या: 1)।

चित्र 1: पुरास्थल का विहंगम दृश्य

पुरास्थल पर सर्वक्षण के क्रम एक प्राचीन कालीन मन्दिर, मृदभाण्ड के टुकड़े तथा पकी मिट्टी के ईटों का अवशेष प्राप्त हुआ है। सर्वेक्षण में जिस मन्दिर का अवशेष प्राप्त हुआ है वह शिव का मन्दिर है (चित्र संख्याः 2) तथा मन्दिर का निर्माण सर्वप्रथम ईटों से किया गया है और बाद के कालों में पाषाण के द्वारा पुर्ननिर्माण के स्पष्ट साक्ष्य दिखाई पड़ता है क्योंकि मन्दिर इतना जर्जर हो चुका है (चित्र संख्याः 7) कि दीवाल एवं गुम्बद में लगी पाषाण की पट्टी उखड़ चुकी है जिससे ईटों से बनी संरचना स्पष्ट दिखाई पड़ती है (चित्र संख्याः 3)। मन्दिर संरचना के विकास की दृष्टि से देखा जाय तो यह मन्दिर द्वितीय अवस्था का प्रतीत होता है क्योंकि मंदिर में गर्भगृह का भाग एवं आगे छोटा सा मण्डप बना हुआ है और गर्भ गृह के ऊपर एक छोटा सा गुम्बद बना हुआ है तथा उसे पत्थर की पट्टी के माध्यम से चौकोर रूप प्रदान किया गया है। मन्दिर पूरी तरह से वृक्षों से ढका हुआ है दूर से मन्दिर का केवल कुछ ही भाग दिखाई पड़ता है मन्दिर के गर्भगृह में कोई भी मूर्ति वर्तमान समय में नहीं है (चित्र संख्या–6) लेकिन मन्दिर के द्वार के बाहर एक जर्जर नन्दी की प्रतिमा लगी हुई है तथा ललाट के ऊपर गणेश जी की छोटी सी प्रतिमा लगी हुई है जिससे मन्दिर की पहचान शिवमन्दिर के रूप में की गयी है इसलिए पुरास्थल को प्रहलादपुर ''शिवाला'' अर्थात ''शिव का आलय'' नाम से जाना जाता है।

मन्दिर के द्वारा के ललाट के ऊपर गणेश प्रतिमा के दॉयी ओर से देवनागरी लिपि में 10 पंक्तियों का लेख लिखा हुआ (चित्र संख्या–4)। इसमें भी महादेव शब्द आया हुआ। लेख के कुछ अक्षर स्पष्ट नहीं हो रहे है लेख के आठवी पंक्ति में प्रहलादपुर शब्द आया हुआ तथा दशवी पक्ति में सन् लिखा हुआ लेकिन स्पष्ट नहीं हो पाया है। मन्दिर के द्वार का भाग अलंकृत स्तम्भों के माध्यम से बना हुआ है। मन्दिर के द्वार में लगे स्तम्भ के निचले भाग पर दोनों तरफ एक–एक द्वारपालों की प्रतिमा लगी हुई है (चित्र संख्या–5)।

चित्र 2: प्राचीन मन्दिर

मन्दिर का आधार भाग और दिवाल का भाग भी अलंकृत पट्टियों के प्रयोग के द्वारा बना हुआ है। मन्दिर का निर्माण बलुए पत्थर की बनी अलंकृत पट्टियों और स्तम्भों के प्रयोग से हुआ है। वाराणसी परिक्षेत्र में जब गहडवालों का शासन था तो उनके समय में बहुत से मन्दिरों का निर्माण करवाया गया तो हो सकता कि इस मन्दिर का निर्माण भी गहड़वालों के समय में किया गया हो लेकिन मन्दिर के आधार भाग में लगी ईंटे और भी प्राचीन प्रतीत होती है (चित्र संख्याः8)। इन ईटों की बनावट प्रहलादपुर (नरायण एवं राय, 1968: 10–11) पुरास्थल से प्राप्त ईंटों के समान है हांलाकि प्रहलादपुर से प्राप्त ईटों का प्रयोग किस काल में प्रारम्भ हुआ, यह स्पष्ट नहीं हैं। राजघाट पुरास्थल से भी इस तरह की ईटें तृतीय एवं चतुर्थ काल से मिलती है (नरायण एवं राय, 1976, 28–31), जिसके आधार पर यहाँ से प्राप्त ईटों को भी 200 ईस्वी से 500 ईस्वी के मध्य का माना जा सकता है।

चित्र 3: गणेश प्रतिमा एवं लेख

चत्र 4: टुटी हुई नन्दी की प्रतिमा एवं द्वारपाल

चित्र 5: मन्दिर का पिछला भाग

चित्र 6: गर्भ गृह

चित्र 7: मन्दिर के टुटे अवशेष

चित्र 8: आधार भाग में प्रयुक्त ईंट

चित्र 9: पुरास्थल से प्राप्त मृद्भाण्डीय अवशेष

यहाँ से प्राप्त मृदभाण्डों के टुकड़ों में लाल मृदभाण्ड, लाल–लेपित मृदभाण्ड और काले मृदभाण्ड है (चित्र संख्या –9)। इन मृदभाण्डों के टुकड़ों के आधार पर कहाँ जा सकता है कि यहाँ का मनाव हॉडी, तश्तरी और कटोरा इत्यादि पात्रों का प्रयोग करता था। इस तरह के पात्रों के अवशेष नजदीकी पुरास्थल प्रहलादपुर (नरायण एव राय, 1968:66–67) के प्रथम 'ब' और 'स' उपकाल से प्राप्त होते हैं जिसके आधार पर कहाँ जा सकता है इस पुरास्थल पर भी मानव का पर्दापण लगभग 300 ई0 पू0 में हो चुका था और जब प्रहलादपुर पूरास्थल उजाड़ हो रहा था तो धीरे–धीरे प्रहलादपुर शिवाला पूरास्थल पर मानव का रहन–सहन बढ़ता गया। यहां से प्राप्त मंदिर स्थापत्य अवशेष की बनावट एवं कलात्मकता वाराणसी परिक्षेत्र में गहढ़वाल काल में बनाए जा रहे मंदिरों के समान प्रतीत होती है । मंदिर के द्वार के ऊपर एक 10 पंक्तियों का लेख भी प्राप्त हुआ है जिसमें सन् का भी उल्लेख है जिसमें १२ स्पष्ट हो पा रहा है, लेकिन आगे का अक्षर स्पष्ट नहीं हो पा रहा है। दो स्पष्ट अक्षरों के आधार पर इस मंदिर के निर्माण की तिथि 12 वीं शताब्दी से तेरहवीं शताब्दी ईसवी के मध्य रखी जा सकती है। इस लेख में बनारस नाम स्पष्ट उल्लिखित है जिसके आधार पर यह संभावना की जा सकती है कि यह क्षेत्र बनारस के शासक के द्वारा शासित रहा होगा। इन सभी विवरणों के आधार पर इस पुरास्थल की ऐतिहासिक विरासत को मोटे तौर पर 300 ईसा पूर्व से तेरहवीं शताब्दी ईस्वी के मध्य रखा जा सकता है। वर्तमान समय में भी इस पूरा स्थल के समीप मानवीय निवास हो रहा है, जिससे यह पूरा स्थल आज भी गुलजार है।

सन्दर्भ

1. नरायन, ए0के0 एवं टी0एन0 राय, 1968, द एक्सकेवेशन एट प्रहलादपुर, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी।
2. नरायन, ए0के0 एवं टी0एन0 राय, 1976, एक्सकैवेशन एट

राजघाट, ए0आई0एच0सी0 एण्ड आर्कियोलॉजी विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी।
3. सिंह, पुरुषोत्तम एवं अशोक कुमार सिंह 2004, द आर्कियोलॉजी ऑफ मिडल गंगा प्लेन, न्यू पर्सपेक्टीव्स (एक्सकैवेशन एट अगियाबीर), आर्यन बुक इण्टर नेशनलः नई दिल्ली।
4. कुशवाहा, संजय कुमार, 2014, 'मुण्डहरः एक सम्भावित बौद्ध पुरास्थल आजमगढ़, उत्तर प्रदेश', मानविकी, सम्पादक प्रो0 आर0 एन सिंह ए रिफर्ड जर्नल ऑफ द सोसाइटी फॉर एजुकेशन एण्ड शोसल वेलफेयर : वाराणसी।
5. पाल, जे0एन0, 1986, आर्कियोलाजी ऑफ साउर्दन उत्तरप्रदेश, इलाहाबाद।
6. तिवारी, राकेश 1997–98 ''इन क्वेस्ट ऑफ आयरन एज साइट इन कर्मनाशा वैली'' 'प्राग्धारा 'नं08, लखनऊ।
7. सिंह, पी0, आर0 तिवारी एण्ड आर.एन0सिंह, 1999–2000 ''एक्स्प्लोरेशन इन चन्दौली डिस्ट्रिक्ट (यू0पी0)'' 'प्राग्धारा' न0 10, लखनऊ उत्तर प्रदेश।
8. इण्डियन आर्कियोलाजीः ए रिव्यू, 1962–63।
9. कनिंघम, ए0, 1880 'ए रिपोर्ट आफ् टुर्स इन गगेटिक प्रोविन्सेज फ्राम बाँदा टू बिहार इन 1875–76 एण्ड 1877–78' वाल्यूम XI , कलकत्ता।
10. कार्लाइल, ए0सी0 एल0, 1885 रिपोर्ट ऑफ टुर्स इन गोरखपुर, सारण एण्ड गाजीपुर इन 1977–80, कलकत्ता।
11. फुहरर, ए0, 1981 द मानुमेण्टेल एन्टीक्वीटिज एण्ड इन्सक्रीप्सन्स इन द नार्थ वेस्ट प्रोविन्सेज एण्ड अवध, नई दिल्ली, आर्कियोलाजिकल सर्वे ऑफ इंण्डिया।
12. राय, टी0 एन0, 1983, द गंगेज सिविलाइजेशन, रामानन्द विद्याभवनः नई दिल्ली।